By
Kavita Sinha

राजनीतिक सिद्धान्त के ह्रास (पतन) से तात्पर्य

जब राजनीतिक सिद्धान्त के पतन की बात करते है तो इससे अभिप्राय परम्परावादी राजनीतिक सिद्धान्त के पतन से है। परम्परावादी राजनीतिक सिद्धान्त की एक लम्बी परम्परा रही है। इसका आरम्भ प्लेटो, अरस्तू, मैकियावेली, हॉब्स, लॉक, रूसो और लास्की जैसे दार्शनिकों के चिन्तन एवं ग्रन्थों से मिलता है।

परम्परावादी राजनीतिक सिद्धान्त राजनीति को नैतिकता से जोड़ता था और मूल्यों पर आधारित दर्शन था।

आज राजनीतिक दार्शनिकों की महान परम्परा का अवसान नजर आने लगा है। डेविड ईस्टन और अल्फ्रेड कोबेन जैसे विद्वानों ने तो राजनीतिक सिद्धान्त के ह्रास (पतन) की बात कही है। वहीं पीटर लासलेट तथा रोबर्ट डहल ने तो राजनीतिक सिद्धान्त के निधन की घोषणा भी कर दी है।

Scanned with CamScanner

राजनीतिक सिद्धान्त के पतन के कारण

डेविड ईस्टन तथा आल्फ्रेड कोबां जैसे विद्वानों ने राजनीतिक सिद्धान्त के पतन के कारणों की विस्तार से विवेचना की है। 20 वीं शताब्दी के मध्य में जैसा कि डेविड ईस्टन का कहना है कि हम सामाजिक तनाव और सांस्कृतिक परिवर्तन के बुनियादी संकट से गुजर रहे हैं, किन्तु यह आश्चर्य की बात है कि दुनिया के किसी भी कोने में राजनीतिक दर्शन का उत्कर्ष नहीं हुआ।

कोबां का मत है कि लोकतान्त्रिक शासन का विस्तार राजनीतिक सिद्धान्त के पतन के लिए उत्तरदायी है। क्योंकि लोकतंत्र में लोग आसानी से अपने जीवन के उद्देश्य से सन्तुष्ट लगते हैं और इसके कारण राजनीतिक जीवन निष्क्रिय हो जाता है।

मुख्य रूप से राजनीतिक सिद्धान्त के पतन के निम्नलिखित कारण बतलाये जाते हैं:—

Scanned with CamScanner

(1) महान राजनीतिक दार्शनिकों की परम्परा का अवसान →

कार्ल मार्क्स, जे. एस. मिल तथा लास्की के बाद एक भी उल्लेखनीय राजनीतिक दार्शनिक नहीं हुआ है। वस्तुतः राजनीतिक दार्शनिकों की महान् परम्परा का अवसान हो चुका है, इसलिए राजनीतिक सिद्धान्त का पतन होना स्वाभाविक है।

(2) राजनीति शास्त्र को 'विज्ञान' बनाने की चेष्टा →

जब राजनीति को विज्ञान बनाने की चेष्टा में सब लोग जुटे हों तो राजनीतिक सिद्धान्त का निर्माण कैसे हो सकता है, क्योंकि उसका आधार दर्शन है न कि विज्ञान।

(3) व्यवहारवाद का उदय और प्रभाव →

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद व्यवहारवाद का बोलबाला बढ़ने लगा। व्यवहारवाद का आधार नई अनुभववादी प्रविधियाँ है जिसमें सांख्यिकीय पद्धति, साक्षात्कार पद्धति, सर्वे पद्धति आदि प्रमुख है। अब राजनीतिक शोध में कल्पना, नैतिक, सौन्दर्य बोध जैसे दार्शनिक तत्व कम प्रभावशील है।

Scanned with CamScanner

(4) तथ्यों के संकलन पर दिया जाने वाला जोर →

राजनीतिक सिद्धान्त मूल्यपरक होता है। परम्परावादी राजनीतिक सिद्धान्त भी मूल्यपरक था। किन्तु आज तथ्यों के संकलन पर अधिक बल दिया जाता है, इसलिए भी परम्परागत स्वरूप वाले राजनीतिक सिद्धान्त का पतन हुआ है।

(5) इतिहासवाद की बढ़ती हुई प्रवृत्ति →

अनेक विद्वानों का कहना है कि इतिहासवाद की बढ़ती हुई प्रवृत्ति के कारण भी राजनीतिक सिद्धान्त का पतन हुआ है। प्लेटो, अरस्तू से लेकर 19 वीं शताब्दी तक राजनीतिक सिद्धान्त की रचनात्मक भूमिका रही, जिसका अर्थ यह था कि राजनीतिक चिन्तन अपने समय की घटनाओं का प्रभाव मूल्यांकन कर यह निर्देशित करते थे कि क्या होना चाहिए? राजनीतिक सिद्धान्त का स्थान अब राजनीतिक विचारों के इतिहास ने ले लिया और उसने उपर्युक्त रचनात्मक भूमिका त्याग दी।

Scanned with CamScanner

(6) विचारधाराओं का बढ़ता हुआ प्रभाव →

जरमीनों जैसे विद्वान ने राजनीतिक सिद्धान्त के पतन के कारण 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में विचारधाराओं के बढ़ते हुए प्रभाव को माना है।

(7) अनुभववाद →

20 वीं शताब्दी को अति तथ्यवाद का युग कहा जाता है। राजनीतिक सिद्धान्त की प्रतिष्ठा कम हो गई, अधिक से अधिक तथ्य एकत्रित किये जाने लगे और इस तरह से जो निष्कर्ष निकाले जाते हैं वे मात्र सामान्यीकरण होते हैं।

(8) राजनीति मात्र शैक्षणिक अध्ययन →

आज राजनीति मात्र शैक्षणिक अध्ययन का विषय बन कर रह गयी है। जबकि कोबां के अनुसार प्राचीनकाल में राजनीतिक सिद्धान्त व्यावहारिक था, सिद्धान्तशास्त्री और चिन्तक अपने आप में दलीय व्यक्ति था।

Scanned with CamScanner

निष्कर्ष

संक्षेप में कहा जा सकता है कि २० वीं शताब्दी में परम्परावादी स्वरूप वाले राजनीतिक सिद्धान्त का पतन होने लगा। जिसके अनेक कारणों (जैसे, — राजनीति को विज्ञान बनाने की प्रवृत्ति, व्यवहारवादी आन्दोलन, इतिहासवाद, अति तथ्यवाद) को हमने समझा।

फिर भी यह कहना समीचीन प्रतीत होता है कि परम्परावादी राजदर्शन की परम्परा एकदम समाप्त नहीं हुई है। यदि डेविड ईस्टन और कोबां एक ओर है तो ईसाह बर्लिन, ब्लोंडेल और लियो स्ट्रॉस दूसरी ओर है जो उतने ही बल के साथ यह कहते है कि राजनीतिक सिद्धान्त न तो मर रहा है और न ही मृत है। यह पूर्णतया जीवित है।

Scanned with CamScanner